Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2020, VOL- 8/41

भारत में वैकल्पिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति: एक विहंगावलोकन

आलोक कृष्ण द्विवेदी
पी-एच. डी. शोधार्थी (शिक्षा विद्यापीठ), महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र,
ईमेल- anmol.alok81@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत लेख में भारत में वैकल्पिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की गई है। भारत में चल रहे वैकल्पिक विद्यालय जो भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनिकों के सिद्धांतों पर आधारित है तथा पारंपरिक शिक्षा से भिन्न शिक्षा प्रणाली पर कार्य करते है। छात्र क्रिया आधारित शिक्षा, छात्रों की स्व-अधिगम प्रक्रिया तथा स्व-मूल्यांकन प्रक्रिया इत्यादि विशेषताओं पर ये विद्यालय संचालित हैं।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना-

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वह वाली प्रक्रिया है जो समाज के हर व्यक्ति को एक समाज की जरूरतों और मांगों के अनुसार विकसित करता है। शिक्षा समाज की उस प्रक्रिया को भी संदर्भित करती है जिसके माध्यम से एक समाज अपनी सांस्कृतिक विरासत को अपने युवा को स्थानांतरित करता है । शिक्षा समाज के मूल्य ज्ञान और कौशल को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक ले जाने का काम करती है । यह ज्ञान तथा सूचना प्राप्त करने और साझा करने के लिए,सीखने और संचार के लिए एक आवश्यक उपकरण है। शिक्षा समाज के हर व्यक्ति के विकास और मूल्यांकन के लिए पूर्व शर्त है। एक समाज के लिए मानव कारक संदर्भ सर्वोच्च मूल्य का होता है। इस प्रकार मनुष्य के विकास और समाज की प्रगति के लिए शिक्षा को आवश्यक उपकरणों में से एक माना गया है। सामाजिक और आर्थिक प्रगति की सुविधा में शिक्षा की भूमिका अच्छी तरह से ज्ञात है। शिक्षा व्यक्तियों और समूह दोनों के अधिकारों के लिए अवसर प्रदान करता है। शिक्षा विकास के अपने व्यापक अर्थों में कौशल और ज्ञान के साथ लोगों के सशक्तीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण आधार है जो उन्हें भविष्य में उत्पादक रोजगार की पहुंच प्रदान करता हैं। शिक्षा में प्रगति केवल दक्षता में वृद्धि की उम्मीद नहीं है बल्कि उसकी समग्र गुणवत्ता में सुधार की उम्मीद भी है। "वैकल्पिक शिक्षा" शब्द, से तात्पर्य मुख्यधारा की शिक्षा के अलावा शिक्षण और अधिगम के अलग-अलग दृष्टिकोणों का वर्णन है। आमतौर पर यह एक विशेष, पाठ्यक्रम और अध्ययन का एक लचीला कार्यक्रम है जो काफी हद तक सार्वजनिक या निजी विद्यालयों के रूप में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत हितों और आवश्यकताओं पर आधारित है, यद्यपि व्यापक अर्थों में देखा जाए तो "वैकल्पिक शिक्षा" शब्द में सभी शैक्षिक गतिविधियां शामिल हैं जो परंपरागत विद्यालय प्रणाली से भिन्न हैं (एरोन, 2003)। वैकल्पिक विद्यालय एक शैक्षिक प्रतिष्ठान है, जिसमें एक पाठ्यक्रम और विधियां हैं जो गैर-परंपरागत हैं । ऐसे विद्यालय दर्शनशास्त्र और शिक्षण विधियों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं। कुछ में मजबूत राजनीतिक, विद्वान, या दार्शनिक उन्मुखताएं हैं, जबकि अन्य में मुख्यधारा या पारंपरिक शिक्षा के कुछ पहलू से असंतुष्ट शिक्षकों और विद्यार्थियों की अधिकता हैं। कुछ विद्यालय एक संस्कृति में नियोजित मुख्यधारा के अध्यापन से भिन्न शैक्षिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं (कार्नी, 2003)। वैकल्पिक शिक्षा को लेकर आज हर अभिभावक जागरूक हो रहा है। शिक्षाविदों का भी यही मानना हैं कि बच्चों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जिससे उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो। शिक्षा ऐसी हो जो न मात्र उन्हें ज्ञान दे बल्कि उसे रोज़गार भी दिलाये। वैकल्पिक शिक्षा का आधार तथा उसकी संकल्पना इस विश्वास पर टिकी हुई है कि शिक्षित होने के कई मार्ग हैं और यह एक बहुआयामी परिप्रेक्ष्य है न

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कि कोई प्रक्रिया या कार्यक्रम । वैकल्पिक शिक्षा में कई तरह के पर्यावरण और संरचनाएं हैं जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी वैयक्तिक भिन्नता होती है और इस कारण प्रत्येक व्यक्ति को एक समान तरीके से नहीं सिखाया जा सकता साथ ही उसे एक समान पाठ्यक्रम का अनुसरण करते हुए नहीं सिखाया जा सकता। वैकल्पिक शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो विकल्पों में विविधता के माध्यम से सांस्कृतिक बहुलता को समावेशी बनाता है। वैकल्पिक शिक्षा इस बात में विश्वास रखती है कि प्रत्येक व्यक्ति समुदाय के शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति का मार्ग खोज सकता है। वस्तुतः अलग-अलग प्रकार के वैकल्पिक विद्यालय हैं जो अपने विद्यालयी वातावरण, छोटे शिक्षक-छात्र अनुपात तथा संशोधित पाठ्यक्रम के साथ संचालन कर रहे हैं (व्हाइट, 2003)।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैकल्पिक शिक्षा-

सीखने के विज्ञान की शुरुआत, संज्ञानात्मक और सामाजिक प्रक्रियाओं के बारे में जो हम जानते हैं उसके प्रभावी मॉडल के एक महत्वपूर्ण पुनर्मूल्यांकन के लिए अनुमति देता है जिसके परिणामस्वरूप प्रभावी सीखने की प्रक्रिया होती है। (बेयर एट आल.,2001) विगत दो शताब्दियों में व्यक्त स्कूली शिक्षा के मानक मॉडल की आलोचना ने सीखने के विज्ञानों में हाल के निष्कर्षों के प्रकाश में नया समर्थन प्राप्त किया है। एक तरफ वे स्कूली शिक्षा के पारंपरिक संचरण और अधिग्रहण मॉडल की कमियों की पुष्टि करते हैं और दूसरी ओर वे कई वैकल्पिक स्कूलों की मुख्य विशेषताओं के लिए अनुभवजन्य समर्थन प्रदान करते हैं, जो उनके निर्देशात्मक कार्यप्रणाली, अनुभवों और उनके एकीकृत पाठ्यक्रम तथा उनके स्वतंत्र अनुकूलित अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो रचनात्मक आकलन के साथ संयुक्त रूप से कार्य करते हैं(ग्रीनो, 2006)। व्यक्तिगत शिक्षार्थी पर मजबूत ध्यान केंद्रित करने वाला एक और क्षेत्र है जिसमें सीखने के उभरते विज्ञान वैकल्पिक विद्यालयों की मान्यताओं की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं। पारंपरिक स्कूल अभी भी "वन साइज़ फिट्स आल" मॉडल का अभ्यास करते हैं, जिसके अनुसार एक निश्चित आयु के प्रत्येक छात्र को एक ही चीज़ को एक ही समय में सीखना माना जाता है, जबकि वैकल्पिक स्कूल अपने छात्रों को अधिक अनुकूलित सीखने का अनुभव प्रदान करते हैं, जो अक्सर एक ही कक्षा में विभिन्न आयु के छात्रों को मिलाते हैं। (जॉर्ज और जॉर्ज, 2000, कोल्लिन्स, 2006) वैकल्पिक स्कूलों ने हाल के वर्षों में एक निश्चित सीमा तक भूमिका निभाई है, क्योंकि उनके द्वारा विकसित की गई कई निर्देशात्मक रणनीतियों और मूल्यांकन तकनीक ने दुनिया भर में सार्वजनिक स्कूल प्रणाली में सीखने और सिखाने को प्रभावित किया है। छात्र ज्ञान के विविध स्रोतों तक पहुंच पाते हैं और जहां कहीं भी प्रामाणिक शैक्षिक विकल्प पूछताछ उन्मुख परियोजनाओं में शिक्षण समूह अधिगम के साथ सीखने को जोड़ते हैं तथा उन्हें गहराई से समझने और आगे सीखने के लिए उनका आकलन करते हैं। वैकल्पिक स्कूल दुनिया भर में मुख्यधारा की शिक्षा के नवीकरण के लिए सार्थक मॉडल के रूप में काम करते हैं।

वैकल्पिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति-

भारत में चल रहे वैकल्पिक विद्यालय जो भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनिकों के सिद्धांतों पर आधारित है तथा पारंपरिक शिक्षा से भिन्न शिक्षा प्रणाली पर कार्य करते है । छात्र क्रिया आधारित शिक्षा, छात्रों की स्व-अधिगम प्रक्रिया तथा स्व-मूल्यांकन प्रक्रिया इत्यादि विशेषताओं पर ये विद्यालय संचालित हैं। वैकल्पिक विद्यालयों की सम्पूर्ण कार्य प्रणाली तथा उनकी शिक्षण विधियों एवं विशेषताओं का विस्तार वर्णन इस प्रकार है-

वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली-

वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली आधुनिक शिक्षा की वह व्यवस्था है जिसमें शिक्षा की मुख्यधारा की अपेक्षा अनेकों नई शिक्षा प्रणालियाँ उपयोग में लायी जाती हैं। वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली उन स्कूलों और कार्यक्रमों को संदर्भित करता है जो राज्यों, स्कूल जिलों या अन्य संस्थाओं द्वारा स्थापित किए जाते हैं। इस शिक्षा प्रणाली में उन विद्यार्थियों की सहायता की जाती है जो पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में सफल नहीं हो पाते। वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली में सीखने की अक्षमता तथा व्यावहार संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए विभिन्न अभिनव तरीकों से सीखने

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

का अवसर दिया जाता है। वस्तुतः अलग-अलग प्रकार के वैकल्पिक विद्यालय हैं जो अपने विद्यालयी वातावरण, छोटे शिक्षक-छात्र अनुपात तथा संशोधित पाठ्यक्रम के साथ संचालन कर रहे हैं (व्हाइट, 2003)। वर्तमान समय में भारत में निम्न शिक्षण प्रणालियाँ चल रही हैं-

1. मोंटेसरी शिक्षा प्रणाली
2. वोल्डोर्फ शिक्षा प्रणाली
3. अरबिंदो शिक्षा प्रणाली
4. कृष्णमूर्ति शिक्षा प्रणाली
5. बुनियादी शिक्षा प्रणाली
6. टैगोर शिक्षा प्रणाली

मोंटेसरी शिक्षा की एक विधि है जो स्व-निर्देशित गतिविधि, करके सीखने और सहयोगात्मक अधिगम पर आधारित है। मोंटेसरी कक्षाओं में बच्चे अपने शिक्षण में रचनात्मक विकल्प बनाते हैं, जबकि कक्षा और उच्च प्रशिक्षित शिक्षक प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने के लिए आयु के अनुसार गतिविधियों की पेशकश करते हैं। मोंटेसरी शिक्षा आनंदमयी रूप से खेल-खेल मे अधिगम का एक रूप है, जिसमे स्वयं को छोटे बच्चों के अनुरूप अधिगम के प्रमुख घटक – नाटक के बारे में आलोचनात्मक रूप से बताया गया है, जिसमें नाटक के संबंध में स्पष्ट रूप से दूसरे विकल्पों पर भी चर्चा करता है कि यह शिक्षा पद्धति कैसे और किस प्रकार वर्तमान समय के लिए लाभप्रद है (लीलार्ड, 2013)। बच्चे समूहों में काम करते हैं और व्यक्तिगत रूप से दुनिया के ज्ञान की खोज और अन्वेषण करते हैं और अपनी अधिकतम क्षमता विकसित करते हैं। मोंटेसरी कक्षाओं को एक विशिष्ट आयु सीमा में बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है। मोंटेसरी कक्षा की प्रत्येक सामग्री बाल विकास के एक पहलू का समर्थन करती है, जो बच्चे के प्राकृतिक हितों और उपलब्ध गतिविधियों के बीच एक मेल पैदा करती है। बच्चे अपने अनुभव से और अपनी गति से सीख सकते हैं। वे किसी भी क्षण उन प्राकृतिक जिज्ञासाओं का जवाब दे सकते हैं, जो सभी मनुष्यों में मौजूद हैं और जीवन भर सीखने के लिए एक ठोस आधार बनाते हैं।

वाल्डोर्फ शिक्षा, जिसे स्टेनर शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है, एन्थ्रोपोसेफी के संस्थापक रूडोल्फ स्टीनर के शैक्षिक दर्शन पर आधारित है। इसका शिक्षाशास्त्र एक एकीकृत और समग्र रूप से विद्यार्थियों के बौद्धिक, कलात्मक और व्यावहारिक कौशल को विकसित करने का प्रयास करता है। वाल्डोर्फ विधि एक व्यापक पाठ्यक्रम को प्रोत्साहित करती है। जिन बच्चों को वाल्डोर्फ स्टीनर दृष्टिकोण का उपयोग करके शिक्षित किया जाता है, वे बेहतर अभिव्यंजक ड्राइंग कौशल प्रदर्शित करते हैं, लेकिन इस शैक्षिक प्रणाली के भीतर कला कैसे सिखाई जाती है, इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। चार वाल्डोर्फ स्टीनर प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों ने वाल्डोर्फ स्टीनर शैक्षिक दर्शन, उनके प्रशिक्षण और कक्षा में कला के तरीकों को जानने के लिए डिज़ाइन किए गए अर्ध-संरचित साक्षात्कारों में भाग लिया। एक सामाजिक निर्माणवादी विषयगत विश्लेषण ने दो विषयों की पहचान की - शिक्षक का कला का अनुभव और शिक्षक और कला के प्रति बच्चे का दृष्टिकोण। इन विषयों के भीतर पर्याप्त प्रशिक्षण का महत्व है जो कला के मूल्य पर बल देता है और शिक्षकों को कला गतिविधियों में संलग्न होने का अवसर देता है। इस तरह के प्रशिक्षण को एक प्रभावी शिक्षण दृष्टिकोण से जोड़ा गया, जिसने शिक्षण कौशल पर महत्व दिया और चर्चा के माध्यम से बच्चों को कला की समझ विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया (हालम, इगन एंड किरखम्ब, 2016)। शिक्षकों को नए विषयों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और छात्रों के अन्वेषण द्वारा खुद को निर्देशित करने की अनुमति मिलती है। इस प्रकार के शिक्षण में किसी परीक्षा को उत्तीर्ण करने या अच्छी तरह से ग्रेडिंग रूब्रिक्स पर स्कोर करने के बजाय सीखने के लिए अधिगम को प्रोत्साहित किया जाता है। वाल्डोर्फ प्राथमिक विद्यालय में कोई ग्रेड नहीं दिया जाता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

अरबिंदो के अनुसार शिक्षा मानव के मस्तिष्क और आत्मा की शक्तियों का निर्माण करती है। सम्पूर्ण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मन, शरीर और आत्मा का समग्र विकास है। अरबिंदो का मानना है कि शिक्षा को एक छात्र नैतिक मूल्यों,मानवता और चरित्र निर्माण में विकसित करना चाहिए। अरबिंदो विद्यालय में एक अनुकूल सुरक्षित सहायक वातावरण है जो आत्म-अनुशासन और आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करता है। आध्यात्मिक शिक्षा, शिक्षा का उच्चतम स्तर है जो सार्वभौमिक भाईचारे, स्वतंत्रता, सेवा, सहयोग, ज्ञान, शक्ति, सौंदर्य, प्रेम, सहानुभूति, बुद्धि, शांति और शांति के माध्यम से व्यक्तियों की क्षमताओं को पूरा करने में मदद करता है (श्रीवास्तव, 2015)। रट आधारित सीखने के बजाय पूछताछ आधारित सीखने पर जोर दिया जाता है। ज्ञान के लिए अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि बच्चा एक प्राकृतिक समग्र के लिए विभिन्न विषयों के ज्ञान को एकीकृत कर सके तथा उसके साथ एकीकृत होकर स्वयं का विकास कर सके। विशेष कार्यक्रमों और कक्षाओं के माध्यम से मन की शक्तियों और आंतरिक गुणों के विकास पर सीधा ध्यान केंद्रित किया जाता है। शिक्षक सीखने की प्रेरणा देने के लिए उदाहरण के साथ नेतृत्व करते हैं और एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहां सामूहिक सीखने और कौशल साझा करने को प्रोत्साहित किया जाता है।

जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक दर्शन के प्रति दृष्टिकोण एक समग्र दृष्टिकोण है। यह शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिकता का एक सामंजस्यपूर्ण संपूर्णता में एकीकरण है। शिक्षा के लिए कृष्णमूर्ति का दृष्टिकोण अत्यधिक मौलिक और अपरंपरागत था। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के आंतरिक परिवर्तन और मुक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। शिक्षा का कार्य किसी व्यक्ति की बचपन से किसी की नकल करने में नहीं बल्कि उसके स्वयं के प्रति सच्चा होने में मदद करना है। कृष्णमूर्ति ने शिक्षा और समाज के बीच संबंधों पर जोर दिया और कहा कि यह सही शिक्षा की एक समझदार नीति विकसित करने के बाद ही है कि हम बेहतर समाज के गठन के लिए तत्पर हैं। आज के संदर्भ में शिक्षा पर उनके विचार सर्वोपरि हैं। (मेहरोत्रा, 2018) इस दृष्टि से कृष्णमूर्ति ने ऐसे स्कूल शुरू किए, जहाँ बच्चों को न केवल अकादमिक पुस्तकों और विषयों को सीखने के लिए शिक्षित किया जा सकता है, बल्कि स्वयं के रोजमर्रा के जीवन की पुस्तक को पढ़ना भी सिखाया जा सकता है। बच्चों को कक्षा में अपने लिए सोचने की आजादी दें। बच्चे का अच्छी तरह से अध्ययन करें और ऐसे तरीके अपनाएं जो उसे सबसे अच्छा लगे। कृष्णमूर्ति के अनुसार छात्र को एक समान साथी के रूप में माना जाना चाहिए। समस्या का समाधान और खोजपूर्ण तरीकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आज बुनियादी शिक्षा प्रणाली वैकल्पिक विचारों के साथ पारंपरिक शिक्षा के वातावरण को परिवर्तित करते हुए ऐसे समाज का निर्माण कर रहा है, जो वर्तमान समय में अत्यधिक प्रासंगिक है। महात्मा गांधी के अनुसार चरित्र निर्माण छात्रों के बीच सबसे महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि बुनियादी शिक्षा जीवन के लिए और जीवन के माध्यम से शिक्षा है। शिक्षा का उद्देश्य शोषण और हिंसा से मुक्त सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा को हरिजन में अपने लेखों के माध्यम से ऐसे समय में सामने लाया गया था जब शिक्षा को ब्रिटिश साम्राज्य के संवर्गों में नौकरी पाने के लिए कौशल सीखने के लिए माना जाता था। गांधी के लिए शिक्षा शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की गुलामी से मुक्ति थी। शांति शिक्षा बुनियादी शिक्षा के समग्र ढांचे का एक हिस्सा है। संज्ञानात्मक परीक्षणों में डूबी हुई शिक्षा में शांति शिक्षा, नैतिक शिक्षा, धार्मिक और जातीय भावनाओं की सराहना के लिए प्रशिक्षण होना चाहिए। वर्तमान में शिक्षा को विषयों और विशिष्टताओं में कंपित किया जाता है। उत्पादकता और आत्मनिर्भरता पर आधारित गांधीवादी शिक्षा को प्रौद्योगिकी के आधार पर पुनर्परिभाषित किया जाना चाहिए, जबकि गांधीजी का इन विचारधाराओं के लिए क्या मतलब था। वर्तमान पत्र गांधीवादी बुनियादी शिक्षा से संबंधित है, जो 21 वीं सदी की प्रासंगिकता पर बल देता है (मधुसूदन एंड विटस 2016)। बेसिक शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास है। गांधी की बुनियादी शिक्षा शिक्षा की प्रचलित और पारंपरिक प्रणाली में एक सफलता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

टैगोर के अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उसका उपयोग करने तथा उसके वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है और सर्वोच्च शिक्षा वह है जो हमारे जीवन और समस्त सृष्टि के बीच समरसता स्थापित करती है। टैगोर की प्राथमिक स्कूली शिक्षा की प्रक्रिया कला की भूमिका और महत्व पर केंद्रित है। उन्होंने शिक्षा को उस रूप में परिभाषित किया जो जीवन के साथ एक है और उनका मानना था कि केवल शिक्षा ही हमें वास्तविक स्वतंत्रता दे सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा की प्रक्रिया में हम वास्तविकता के सामंजस्यपूर्ण समायोजन के लिए व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करें। कला जीवन और शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए क्योंकि यह कला के माध्यम से ही संभव है कि किसी व्यक्ति के अनुभव और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध की मान्यता को व्यक्त करना संभव है, इसके अलावा व्यक्तिगत वास्तविकता और अमरता उनके सुख का स्रोत है। केवल एक शिक्षक के रूप में कलाएं पूरे व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ वास्तविकता और सच्चाई की धारणा को भी सक्षम बनाती हैं। टैगोर इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में कला की भूमिका को उसके व्यक्तित्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में समझते हैं जो मानवता के लिए योगदान देता है। (लेज़र, 2015) इस प्रकार शिक्षा भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति का साधन है। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य बालक के जीवन और बाहर की दुनिया के बीच सही तालमेल के संरक्षण को सक्षम करना है।

उपसंहार-

पृथक-पृथक समाज एवं संस्कृति पृथक -पृथक परम्पराओं एवं मूल्यों को धारण कराती हैं। ऐसे में बच्चों के लिए आवश्यक होता है कि समाज के अनुसार समायोजन करने के लिए उनमें समाजिक मान्यताओं एवं मूल्यों का अनुरोपण किया जाए। इसके लिए परंपरागत शिक्षा पद्धति आज के समय में बहुत प्रभावकारी नहीं होती। बड़े पैमाने पर इस प्रकार के सामाजिक जरूरत को पूरा करने के लिए वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली का विकास आवश्यक माना जाता है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धा में रत समाज भावनात्मक विचलन का शिकार हो गया है। समस्याएं भावनात्मक असंतुलन के कारण समाज के हर क्षेत्र में विद्यमान हो गई है। माता-पिता इन समस्याओं से ग्रस्त होने के कारण तथा प्रतिस्पर्धा के चक्कर में अपने बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। माता -पिता एवं बच्चों के बीच भावनात्मक अंतर संबंधों का अभाव बच्चों को भी कई तरह से भावनात्मक असंतुलन का शिकार बना देता है। इसके लिए इस प्रकार के समस्या ग्रस्त बच्चों के लिए वैकल्पिक शिक्षा का प्रबंधन किया जाता है ताकि उनका भावनात्मक विकास सही हो सके। व्यक्ति के अंदर भावना एक खास प्रकार की ऊर्जा के रूप में विद्यमान होती है। इसकी सटीक अभिव्यक्ति व्यक्ति को संपूर्णता प्रदान करती है। विचारों की सम्यक अभिव्यक्ति भावनाओं के सम्यक प्रवाह में सम्यक व्यवहार की नींव रखती है । यह सटीक एवं सहज है इससे इंकार नहीं किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची-

एरोन, एल. वाई. (2003). टुवर्ड्स ए टाइपोलॉजी ऑफ अल्टरनेटिव एजुकेशन प्रोग्राम्स : ए कॉम्प्लेसन ऑफ एलिमेंट्स फ्रॉम दी लिटरेचर. वासिंगटन, डीसी : दी अर्बन इंस्टिट्यूट.

कारनी, एफ. (2003). अल्टरनेटिव्स इन एजुकेशन-ए गाइड, रूटलेज फ्लेमर, लन्दन.

वाइट, डी. (2003), दी वरसालिटी एंड वैल्यू ऑफ अल्टरनेटिव एजुकेशन, पार्ट 1 : ओवरव्यू एंड ओरिएंटेशन. वासिंगटन, डीसी : दी जार्ज वासिंगटन यूनिवर्सिटी, हैमिल्टन फिश इंस्टिट्यूट.

बेयर, जी., क्वीन, एम. एम. & बर्कोलडर, एस. (2001). इन्ट्रीम अल्टरनेटिव एजुकेशनल सेटिंग्स फॉर चिल्ड्रन विद डिसएबिलिटीसबेथेस्ड. एमडी : नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्कूल साइकोलॉजिस्टस.

ग्रीनो, जे. जी. (2006). लर्निंग इन एक्टिविटी. दी कैब्रिज हैंडबुक ऑफ दी लर्निंग साइंसिस, कैम्ब्रिज. न्यूयार्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

जार्ज, एम. & जार्ज, एन. (2000). ए कल्चर ऑफ होप : फोस्ट्रिंग सक्सिस इन अल्टरनेटिव डे स्कूल सेटिंग. रीचिंग टूडेस यूथ, 4 (3), 23-27.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कॉलिन्स, ए. (2006). कोगनिटिव एप्रेनटिसशिप. दी कैम्ब्रिज हैंडबुक ऑफ दी लर्निंग साइंसेज. न्यूयार्क : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

लीलार्ड, ए. एस. (2013). प्लेफूल लर्निंग एंड मोंटेसरी एजुकेशन. अमेरिकन जर्नल ऑफ प्ले, 5 (2), 157-186.

हालम, जे. सुसान, आई. & किरखम्ब, जे. (2016). एन इंवेस्टिगेशन इंटू दी वेज़ इन विच आर्ट इज़ टॉट इन एन इंग्लिश वोल्डोर्फ स्टीनर स्कूल. थिंकिंग स्किल्स एंड क्रीएटिविटि, 19 (1), 136-145.

श्रीवास्तव, पी. एस. (2015). स्प्रीचुअल एजुकेशन इन श्री-अरबिंदो फिलोसफी. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंस, 5 (4), 314-324.

मेहरोत्रा, एम. (2018). रीलीवेंस ऑफ एजुकेशनल कंट्रीव्युसन ऑफ जिद्दू कृष्णमूर्ति इन दी प्रेजेंट सिस्टम ऑफ एजुकेशन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एंड मैनेजमेंट, 6 (1), 43-50.

मधुसूदन, एच. & गीथा, वी. (2016). गारमेंसिस ऑफ गांधियन बेसिक एजुकेशन इन दी सेंचुरी. Retrieved from http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.2857516 in June 2019.

लेज़र, आई. (2015). दी रोल ऑफ दी आर्ट्स इन टैगोर्स कांसेप्ट ऑफ स्कूलिंग. सेंटर फॉर एजुकेशनल पालिसी स्टडीज जर्नल, 5 (3), 111-128.

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language